वर्ष-११ अंक-११, २७ जुलाई २०१४

ओ३म्

वैदिक रवि

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

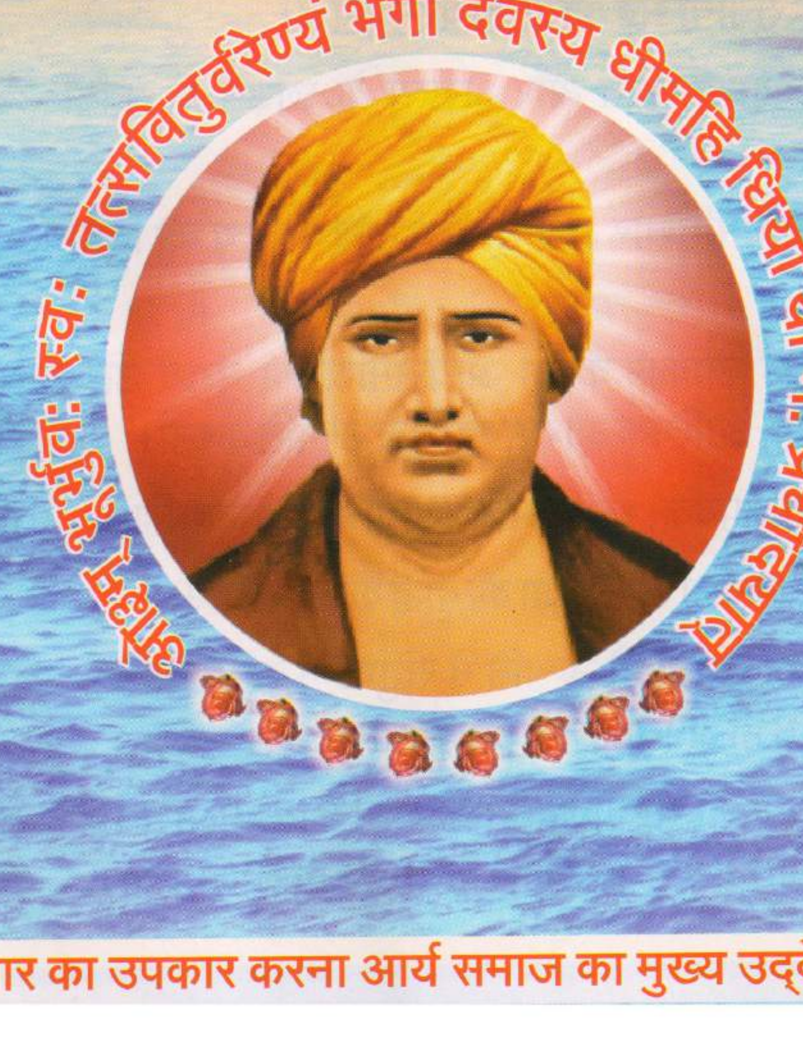

संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है ..

मानव कल्याणार्थ

आर्य समाज के दस नियम

1. सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।
2. ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।
3. वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।
4. सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।
5. सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।
6. संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।
7. सब से प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।
8. अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।
9. प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में ही अपनी उन्नति समझनी चाहिए।
10. सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

ओ३म्

वैदिक-रवि

मासिक

वर्ष-११ अंक-११

२७ जुलाई २०१३

(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)

सृष्टि सम्वत् १९७,२९,४६,११३

विक्रम संवत् २०६९

सलाहकार मण्डल

राजेन्द्र व्यास

पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'

डॉ. रामलाल प्रजापति

वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक

श्री इन्द्रप्रकाश गांधी

कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक

प्रकाश आर्य

फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक

मुकेश कुमार यादव

फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता

एक प्रति- २०-०० रू.

वार्षिक-२००-०० रू.

आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

संपादकीय 2

कर्म-फल सिद्धांत 4

"वेद सुधा" 6

मिलकर रहिए ! बाँटकर खाइए ! 7

वेदों में विज्ञान के संकेत 9

चिन्ता का ईलाज 10

पशु-पक्षियों की पुकार 12

महर्षि दयानन्द सरस्वती 14

कब जोश में आओगे 17

भ्रष्टाचार कारण व निवारण 18

आर्य समाज का पुरोहित... 20

पवित्र वैदिक धर्म की पताका का केन्द्र- केरल 19

अगस्त माह के पर्व त्यौहार, दिवस और जयंतियां

1 बाल गंगाधर तिलक पुण्यतिथि, चरक जयंती

3 गोस्वामी तुलसीदास जयंती, डॉ. मैथलीशरण गुप्त जयंती

9 विश्व आदिवासी दिवस, युवक दिवस, अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलन दिवस

10 श्रावणी पर्व, रक्षाबंधन, लवकुश जयंती, संस्कृत दिवस

15 स्वतंत्रता दिवस, योगी अरविंद जयंती

16 रानी अवंतीबाई, लोधी जयंती

17 मदनलाल धीगरा, शहीद दिवस

18 श्री कृष्ण जयंती, जन्माष्टमी

20 राजीव गांधी जयंती, सद्भावना दिवस

24 देवी अहिल्याबाई होल्कर, पुण्य तिथि

29 राष्ट्रीय खेल दिवस, श्री गणेश जयंती, गणेशोत्सव प्रारंभ,

30 भारतेन्दु जयंती

सम्पादकीय –

मनुष्य की पहचान "परमार्थ"

परमात्मा ने संसार के प्रत्येक प्राणी को जन्म के साथ ही बुद्धि भी प्रदान की है। किसी भी प्राणी के लिए यह भी नहीं कहा जा सकता कि अमुक प्राणी में बुद्धि नहीं है। सामान्यतः हम यह कह देते हैं कि जानवर है इसमें बुद्धि नहीं है। ऐसा कहने का तात्पर्य मानना कि इसमें अकल है ही नहीं अनुचित है। बुद्धि नहीं होती तो गाय, भैंस, पशु–पक्षी अपना जीवन कैसे जीते ? जीवन जीने के लिए जो परिश्रम व प्रयास मनुष्य करता है वह सब पशु–पक्षी, जलचर भी करते है।

खाना, पीना, सोना, परिवार बढ़ाना, प्रयास करना, भयभित होना, सुख प्राप्ति के प्रयास करना यह सब गुण संसार के प्रत्येक प्राणी में पाये जाते है। चाहे वह मनुष्य हो, चौपाया हो, पक्षी हो या जल में रहने वाले प्राणी जीव–जन्तु हो।

बुद्धि के बिना जीवन की यह सब प्रकियाऐं करना असंभव है। जब सभी प्राणियों में बुद्धि है तो फिर इन सबमें ऊँचा स्थान मनुष्य को क्यों दिया ? इस पर सोचना जरूरी है। कार्य तो सभी प्राणी करते हैं, परन्तु उनके कार्य करने का ढंग अलग है। कार्य करने की प्रेरणा बुद्धि देती है, बुद्धि की क्षमता और उसका सोच ही कार्य का परिणाम है।

सामान्य बुद्धि भौतिक सुख साधन को प्राप्त करने का निर्देश देती है। विशिष्ट सद्बुद्धि शरीर व भौतिक साधनों से उपर उठकर आगामी जीवन के सम्बन्ध में भी सोचती है। यदि जीवन की स्थिति में शारीरिक या भौतिक सुख सुविधाओं तक ही रह गए तो फिर पशु और मनुष्य का अन्तर नहीं रह जाता है।

पशु–पक्षी अपनी योग्यता व सीमा व उन्हें उपलब्ध साधनों के अनुसार अपना खाना–पीना रहना करते हैं, और मनुष्य भी यही करता है पर उसका स्तर, उसकी क्वालिटी अलग होती है।

पांच सितारा होटल में जाकर आदमी भूख मिटाने के साथ–साथ तरह–तरह के व्यंजनों का स्वाद लेकर किसी बढ़िया जगह बैठने की व्यवस्था वातानुकूलित कक्ष में बैठकर सुख प्राप्त करता है। वहीं पशु–पक्षी अपनी भूख साधारण रूप में जो, जहां, जैसा, उपलब्ध हो गया उस रूप में मिटाते हैं।

पक्षी अपने रहने का घोंसला अपनी अकल व सामर्थ्य के अनुसार बनाकर परिवार के साथ रह लेते हैं। मनुष्य अपने रहने के लिए आलीशान इमारत बनाकर रहता है। पक्षी अपनी यात्रा उड़कर और चलचर पानी में तैरकर करते हैं। मनुष्य इसके लिए पानी का जहाज, स्टीमर, नाव और वायुयान का उपयोग करता है।

इन उदाहरणों से यह स्पष्ट होता है कि आवश्यकताऐं दोनो की समान हैं, दोनों की आवश्यकताओं की पूर्ति भी हो रही है। इनमें कोई अन्तर यदि है तो केवल साधनो का।

बुद्धि ने ही मनुष्य को सब प्राणियों में सर्वोच्च स्थान दिलवाया हैं। इसीलिए परमात्मा से प्रार्थना करने में सद्बुद्धि की कामना करते है। गायत्री मंत्र को महामंत्र कहते है। इस मंत्र में ईश्वर से भक्त बुद्धि को सत्य मार्ग पर ले जाने की प्रार्थना

करता है। सत्य मार्ग ही धर्म मार्ग है अर्थात जो जैसा हो वैसा ही समझना, मानना, आचरण करना सत्य मार्ग हैं, और यही धर्म हैं।

मनुष्य धर्म का पालन जो करते है वे ही सत्य पथ के अनुगामी है। जिनका आचरण सत्य से मंडित है वे ही मनुष्य कहलाने के अधिकारी हैं, अन्यथा शरीर मनुष्य का पाकर भी जिनका आचरण पशु–पक्षियों जैसा है, वे नकली कागजी फूल के समान है, जो दिखते तो फूल के समान है, परन्तु उनमें सुगन्ध नहीं होती हैं।

मानव की सार्थकता के लिए हमारी कार्यशैली की ओर थोड़ा विचार करना होगा। कर्म को तीन भागों में विभाजित करते हैं:–

पहला है **स्वार्थ** – जो कर्म प्राणी अपने निज लाभ के लिए करता है वह स्वार्थ कहलाता है।

कर्म का यह गुण पशु, पक्षी, जलचर और मनुष्य में समान रूप से पाए जाते है। इसमें किया गया प्रयास अपने तक सीमित रहता है। जीवन रक्षक सभी साधन भी इसी के अन्तर्गत आते है।

दूसरा है **पुरूषार्थ** – जब व्यक्ति अपने साथ ही अपने परिवार के लिए जो कर्म करता है वह पुरूषार्थ कहलाता है।

प्रायः यह कर्म भी सभी प्राणियों में पाए जाते हैं। मनुष्य की तरह पशु भी बाल्याकाल में अपने बच्चों की सुरक्षा उनको खिलाने, पिलाने दूसरों के आकमण से बचाने और अपना भोजन कैसे प्राप्त करना यह बताने के लिए पूर्ण प्रयत्न करते हैं। इस लिए कर्म का यह भाग भी सभी प्राणियों की सामान्य प्रकिया हैं।

तीसरा **परमार्थ** – परमार्थ वह कर्म है जिसमें कार्य करने वाला अपने लिए या अपने परिवार के लिए कोई कार्य नहीं करता है। उसके द्वारा किए जाने वाले कर्म में दूसरों को सुख, सुविधा पहुंचाना उसका उद्देश्य रहता है। ऐसा कर्म जिसके करने में निज स्वार्थ का अभाव हो जो पूर्ण रूप से जो दूसरों के हित के लिए भलाई के लिए है, यही परमार्थ कहलाता है।

कर्म का यह स्वरूप पशु–पक्षी या अन्य किसी प्राणी में नहीं पाया जाता है यह केवल मानव का ही गुण हो सकता है। इस गुण को धारण करना ही धर्म है। सन्त तुलसीदास जी की ये पंक्तियां **"परहित सरस धरम नहीं भाई"** परोपकार को धर्म बताती है।

समाज में रहकर समाज के लिए जो सोचते हैं, जिनके मन में परमार्थ की भावना है, परोपकार करके जीवन का जो सुख भोगते हैं, वे ही मनुष्य कहलाने के अधिकारी है। अन्यथा पहला व दूसरा अपने व अपने परिवार के लिए कर्म तो सभी प्राणियों में भी पाया जाता है। इन कर्मों को ही जीवन में महत्व दिया तो अपने को मनुष्य कहलाना एक धोखा है। मनुष्य का अर्थ तो कर्म के तीसरे भाग अर्थात परमार्थ को अपनाने से ही है। परमार्थ भावना से ही परिवार, समाज व राष्ट्र तथा विश्व सुखी रह सकता है। **सर्वे भवन्तु सुखिनः** इसी से संभव है। इसलिए सही अर्थो में मनुष्य जीवन की पहचान यही परमार्थ है।

– प्रकाश आर्य, महू

कर्मफल सिद्धान्त

— पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

जीव शुभ कर्म या अशुभ कर्म क्यों करता है ?

प्रश्न — जीव शुभ या अशुभ कर्म क्या करता है ?

उत्तर — कर्तव्य जीव का स्वाभाविक गुण है। यह बिना कुछ किये रह ही नहीं सकता। जैसे आग कभी अपनी गर्मी को छोड़ नहीं सकती।

प्रश्न — जब कर्तव्य जीव का गुण है तो वह अशुभ कर्म क्यों करता है ?

उत्तर — कर्म के लिये ज्ञान चाहिये। जीव स्वभाव से अल्पज्ञ है। उसको पदार्थ का ज्ञान प्राप्त करने के लिये ज्ञान प्राप्ति की आवश्यकता है। यथार्थ ज्ञान न होने से वह भूल कर बैठता है। जैसे छोटा बच्चा दीपक की लौ पकड़कर अपना हाथ जला बैठता है।

जीव का हित और कर्म फल

प्रश्न — जीव का हित क्या है ? और उसके कर्मों का इस हित सें क्या संबंध है ?

उत्तर — जीव का हित है अपने स्वरूप को पहचानना। जीव संसार में आकर अपने स्वरूप को भूल जाता है। वह अपने को जड़ या जड़ पदार्थों के आश्रित समझ लेता है। इस बेसमझी से जो कर्म किये जाते हैं, वे अशुभ होते हैं। क्योंकि जितने अधिक ऐसे कर्म होते हैं उतना ही जीव उसमें फँसकर अपने स्वरूप को अधिक भूल जाता है परन्तु जितने कर्म ऐसे हैं जिनसे उसको अपने स्वरूप का परिज्ञान हो, वे शुभ है।

प्रश्न — ईश्वर की व्यवस्था जीव के कर्म–फल द्वारा उसके हित, अहित का कैसे सम्पादन करती है ?

उत्तर — यह तो प्रत्यक्ष है कि हमारी भूलें हमको सचेत करती है। एक बार जलकर बच्चा दीपक की लौ नहीं पकड़ता क्योंकि उसके अज्ञान में कुछ कमी हो गई। ऐसा ही सब कर्मों का हाल है।

कर्म फल का रूप

प्रश्न — परमेश्वर कर्मों का फल किस रूप में देता है ?

उत्तर — कर्मों का फल तो अन्ततोगत्वा सुख या दुःख के रूप में ही होता है परन्तु इस सुख या दुःख को देने के अनेक निमित्त हैं। वह निमित्त न सुख हैं न दुःख, परन्तु सुख या दुःख के साधन अवश्य हैं। यह जानना कठिन है कि अमुक निमित्त कब दुःख का साधन है और कब सुख का। यह व्यवस्था जटिल है। पूर्ण

रूप से उसे ईश्वर ही जानता है परन्तु विद्वान भी अपने अनुभव से तर्क द्वारा या शास्त्र द्वारा इसको जान सकता है।

प्रश्न – बात स्पष्ट नहीं हुई। उदाहरण से समझाइये ?

उत्तर – सिर दबाना एक निमित्त है। इससे सुख और दुःख दोनों हो सकते हैं। समय और परिस्थिति के अनुसार ही इसका निर्णय होगा। इसी प्रकार बहुत सी घटनाएं हैं, जो कभी एक मनुष्य के सुख का साधन होती हैं और कभी दुःख का और कभी एक मनुष्य के सुख का साधन होती हैं और कभी दूसरे के दुःख का। ऐसे उदाहरण सबको मालूम हैं।

प्रश्न – ईश्वर जीव को उसके कर्मों का फल देता है अथवा अन्य के कर्मों का भी ?

उत्तर – ईश्वर जीव को उसी के कर्मों का फल देता है अन्य का नहीं। क्या परीक्षक परीक्षार्थी के अतिरिक्त किसी अन्य परीक्षार्थी के किये हुए कामों के लिये भी अंक देगा ? ऐसा करना तो अन्याय होगा। अर्थात् कर्म किया देवदत्त ने और उसका फल मिले यज्ञदत्त को। यह दया भी न होगी, क्योंकि जीव के भविष्य निर्माण का आश्रय दूसरे व्यक्ति पर होगा। यदि एक जीव के कर्मों का फल दूसरे को मिलने लगे तो व्यवस्था भी न रहेगी। अन्य जीव तो असंख्य हैं। किस–किस के कर्मों का फल किस–किस को दिया जायेगा ? यदि सोहन के काम पर मोहन को अंक दिये गये तो सोहन के साथ अन्याय होगा। अतः ईश्वर किसी को उसी के कर्मानुसार फल देता है, दूसरे का नहीं।

प्रश्न – कर्म का फल किस रूप में मिलता है ?

उत्तर – फल के केवल दो ही रूप हैं सुख या दुःख। शुभ कर्मों का फल सुख है अशुभ कर्मों का फल दुःख। चिरस्थायी और दुःखरहित सुख को आनन्द कहते हैं। स्वर्ग वह अवस्था है जिसमें सुख ही सुख हो, नरक वह अवस्था है जिसमें दुःख अत्यन्त अधिक हो।

0 सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत्त रहना चाहिए।

0 सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिए।

– स्वामी दयानन्द सरस्वती

"वेद सुधा"

– पं. सुरेशचन्द्र शास्त्री

वेद सब सत्य विद्याओंका पुस्तक है, वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। – महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म् शास इत्था महाँ अस्यमित्रखादो अद्भुतः। न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदाचन।। ऋ. 10/152/1

परमात्मा सर्वव्यापक, और सर्वशक्तिमान होने के साथ ही सर्वतोदृष्टा भी हैं अर्थात् सब और से हमारे (प्राणीमात्र के) कर्मों पर पैनी नजर रखता है। इसलिए ईश्वर सर्वोत्तम शासक और सर्वरक्षक है। उसके कानून और नियमों का उल्लंघन करने का किसी में भी सामर्थ्य नहीं है। सारी सृष्टि उसकी महानता के गीत गा रही है। पहाड़ों की ऊँची चोटियों से गिरते झरने, कल कल करती हुई नदियॉ, लहरे लेता हुआ समुद्र, अपनी तीव्र किरणों से अन्धकार का नाश करता सूर्य, अपनी शीतल रश्मियों के प्रकाश से सबको आहलादित करने वाला चन्द्रमा तथा सृष्टि का कण कण प्रभु की महत्ता को प्रकट कर रहा है।

यदि मनुष्य एकान्त में बैठ कर प्रभु की रचना का थोड़ी देर चिन्तन कर ले तो उस परम सत्ता के आगे आत्म समर्पण के भाव उत्पन्न होने लगते है। समर्पण के भाव उसी के प्रति आते है, जो हमारे ह्रदय पर शासन करता है जिसकी महानता व गुणों के ज्ञान से हमारे अन्दर श्रद्धा पैदा हो जाती है। उसी के प्रति हम अपने आप को समर्पित कर देते है। वह परमात्मा अन्तर्यामी रूप से सब पर शासन कर रहा है वह अनन्त सामर्थ्ययुक्त है वह महानतम है उससे महान कोई नहीं, वह अद्वितीय है उसके समान भी कोई नहीं हो सकता है। ऐसे परमैश्वर्यवान ईश्वर को जो अपना उपास्य मान लेता है उसके शत्रु स्वयमेव समाप्त हो जाते है, और इस मंत्र में आगे बड़ी ही सुन्दर बात कही गई है – **"न यस्य हन्यते सखा न जीयते कदाचन"** जो उस दयालु प्रभु को अपना मित्र (सखा) स्वीकार कर लेता है। परमात्मा अपने उस भक्त की सब प्रकार से रक्षा करता है। वैसे तो ईश्वर सर्व रक्षक है किन्तु भक्त गुण विशेष के कारण ईश्वर की कृपा के पात्र बन जाते हैं। जिस ईश्वर का मित्र न कभी मारा जाता है और नहीं कभी पराजित होता है। वह अपने उत्तम कर्मो के द्वारा यश, कीर्ति, रूपी शरीर से अमर हो जाता है। चारों ओर लोग उसके गुणों के गीत गाते है कोई उसे तिरछी नजर से देखने का साहस भी नहीं कर सकता यदि एक राज्य के मंत्री से आपकी दोस्ती हो जाय तो लोग आपके सामने नतमस्तक होने लगते है तो फिर सारे बह्माण्ड का जो स्वामी है उसको मित्र बनाने पर आपका स्तर कितना ऊँचा हो जायेगा। इसका अनुमान भी नहीं लगा सकते क्योंकि वही सच्चा मित्र है। इसलिए उस प्यारे प्रभु से ही सच्ची प्रीति लगाओं इसी में हम सब का कल्याण निहित है।

बोधकथा –

मिलकर रहिए ! बाँटकर खाइए !

एक चेला था। उसने अपने गुरू से पूछा – महाराज ! संसार में रहने का क्या ढ़ंग है ?

गुरू ने कहा – अच्छा प्रश्न किया है तूने। एक–दो दिन में उत्तर देगें।

दूसरे दिन गुरूजी के पास एक व्यक्ति कुछ फल और मिठाई लेकर आया। सब वस्तुएं महात्माजी के सामने रखकर उन्हें प्रणाम किया और उनके पास बैठ गया। महात्मा जी ने उस व्यक्ति से बात भी नहीं की। पीठ मोड़ी, सब–के–सब फल खा लिये। मिठाई भी खा ली। वह व्यक्ति सोचता रहा, यह विचित्र साधु है ! वस्तुएं तो सब खा गया, परन्तु मैं जो सबकुछ लाया हूं, मेरी ओर देखता भी नहीं।

अन्त में कुद्ध होकर उठा, चला गया। उसके जाने के पश्चात महात्मा ने चेले से पूछा – क्यों भाई ? क्या कहता था, वह व्यक्ति ?

शिष्य ने कहा – महाराज ! वह तो बहुत कुद्ध था। कहता था, मेरी वस्तुएं तो खा लीं, मुझसे बोले भी नहीं।

महात्मा बोले – तो सुन ! संसार में रहने का यह ढ़ंग सही नहीं। कोई दूसरा ढ़ंग सोचना चाहिए।

थोड़ी देर पश्चात एक दूसरा व्यक्ति आया। वह भी फल और मिठाईयां ले आया। फल और मिठाइयों को साधु के सामने रखकर बैठ गया।

साधु ने फल और मिठाइयों को उठाया, साथ वाली गली में फेंक दिया और उस व्यक्ति से बड़े प्यार और सम्मान के साथ बातें करने लगा – कहो जी, क्या हाल हैं ? परिवार तो अच्छा है ? कारोबार तो अच्छा है ? बच्चे ठीक हैं ? पढ़ते है न ? बहुत अच्छा करते हो, उन्हें खूब पढ़ाओ। तुम्हारा अपना शरीर तो ठीक है? मन तो प्रसन्न रहता है ? भगवान का भजन तो करते हो ? शरीर अच्छा हो, चित्त प्रसन्न हो और प्रभु भजन में मन लगे तो फिर मनुष्य को चाहिये ही क्या ?

इस प्रकार की मीठी–मीठी बातें करता रहा और वह व्यक्ति होंठों–ही–होंठों कुढ़ता रहा, यह विचित्र साधु है ! मुझसे तो मीठी बातें करता है, मेरी वस्तुओं का इसने अपमान कर दिया, इस प्रकार फेंक दिया, जैसे उसमें विष पड़ा है।

वह भी चला गया तो महात्मा ने चेले से पूछा – क्यों भाई यह तो प्रसन्न हो गया ?

शिष्य ने कहा – नहीं महाराज ! यह तो पहले से भी कुद्ध था। कहता था मेरी वस्तुओं का अपमान कर दिया।

महात्मा बोले – तो सुन भाई ! संसार में रहने का यह ढ़ंग भी ठीक नहीं। अब कोई और विधि सोचनी होगीं।

महात्मा बोले – तो सुन भाई ! संसार में रहने का यह ढ़ंग भी ठीक नहीं। अब कोई और विधि सोचनी होगी।

तभी एक सज्जन वहां आए। वे भी फल और मिठाई लाये। साधु के समक्ष रखकर बैठ गए। साधु ने बहुत प्यार से उसके साथ बात की। उन वस्तुओं को आस पास बैठे लोगों में बांटा। कुछ मिठाई उस व्यक्ति को भी दी, कुछ स्वयं भी खाई। उसके घर बार और परिवार की बातें करते रहे। उसे सुन्दर कथाएं सुनाते रहे। जब वह भी गया, तो महात्मा ने पूछा – क्यों भाई ! यह व्यक्ति क्या कहता था ?

शिष्य ने कहा – यह तो बहुत प्रसन्न था महाराज ! आपकी बहुत प्रशंसा करता था। कहता था – ऐसे साधु को मिलकर चित्त प्रसन्न हो गया।

महात्मा बोले – तो सुन बंदे ! संसार में रहने का सही ढ़ंग यही है।

संसार में रहने का ठीक ढ़ंग यह है कि प्रभु ने जो कुछ दिया है, उसे बांटकर खा, त्याग–भाव से भोग और इसके साथ ही साथ भगवान से प्यार भी कर। उससे बातें कर। उसके नाम का जप कर। उसका ध्यान कर।

थोड़ा हंसिये भी

आत्म हत्या विषय पर एक नवनिर्वाचित मन्त्री महोदय का भाषण – "आत्म हत्या एक जघन्य अपराध है, इस अपराध की सख्त सजा होनी चाहिए।"

मेरे विचार से आत्म हत्या करने वाले अपराधी को मृत्यु दण्ड दिया जाना चाहिये।"

0 0 0

अपने मन्त्री पति का भाषण सुनकर घर लौटी पत्नि ने फरमान जारी किया – सुनते हो जी ! तुमने अपने भाषण में कहा है कि अमीर–गरीब, ऊँच नींच की खाई को भरना होगा। मैं कहे देती हूं कि इन खाईयों को भरने का ठेका मेरे भाई को ही मिलना चाहिये।

0 0 0

अध्यापक (अपने एक छात्र से) – प्रसिद्ध लड़ाईयों के विषय में कुछ बताओ।

छात्र – क्षमा करिए, मेरी माता जी ने घर की बात बताने को मना किया है।

वेदों में विज्ञान के संकेत –

घर्षण विद्युत

इममु त्यमथर्ववदग्नि मन्थन्ति वेधसः।
यमङ् कू यन्तमानयन्नमूरं श्याव्याभ्यः।।

सिद्ध होत मन्थन किये रात्रि किया सम्पन्न।
चिन्ह प्राप्ति या अप्रत्यक्ष, विद्युत रूपी अग्नि।।
यथा भिन्न जो मूढ़ से, गहते ज्ञान प्रबुद्ध।
अथर्व में मन्थन कहाँ, घर्षण विद्युत सिद्ध।।

गृह निर्माण

इन्द्र त्रिधातु शरणं त्रिवरूथ स्वस्तिमत्।
छर्दिर्यच्छ मघवम्द्‌यश्च मह्यं च यावया दिद्यूमेभ्यः।।

ऐश्वर्यों से युक्त मनुज, हो ऐसा निज वास।
तीन धातुओं से बने, त्रय ऋतु हित आवास।।
विविध सुखों से युक्त गृह, धन का व्यय उपयुक्त।
शुभ प्रकाश जिसमें मिले, चिन्ताओं से मुक्त।।

शिला तेल

प्रातर्युजा वि बोधयाष्विनावेह गच्छताम्। अस्य सोमस्य पीतये।।
या सुरधा रथीतमोभा देवा दिविस्पृशा। अश्विना ता हवामहे।।

– ऋग्वेद 1.22.1–2

उक्त सोम द्रव्य का प्राप्ति स्थल पृथिवी और जल बताया जो स्पष्ट ही सोमरस (पेय) से इसकी भिन्नता दर्शाता है, अर्थात् एक शब्द के प्रकारान्तर व प्रयोग स्थल के अनुसार भिन्न अर्थ का द्योतक है।

प्रकाश में सात रंग

बृहस्पतिः प्रथमं जायमानो महो ज्योतिषः परमे व्योमन्।
सप्तास्यस्तुविजातो रवेण वि सप्तरश्मिरधमत्तमासि।।

– ऋग्वेद 4.50.4

भौतिक विज्ञान में श्वेत रंग को सात रंग का सम्मिश्रण बताता है, जिसे संकेत रूप में प्रत्येक रंग के प्रथम आंग्ल अक्षर से दर्शाते हुए (Vibgyour) शब्द द्वारा दर्शाया जाता है। ऋग्वेद का उपरोक्त मन्त्र विज्ञान की इस खोज को करोड़ों वर्ष पूर्ण से देव भाषा संस्कृत में संजोये हुए है, आवश्यकता है कि आज हम विज्ञान के विभिन्न आयामों को वेद के माध्यम से जानें जिनकी खोज अभी संसार के समक्ष आनी शेष है।

गतांक से आगे ....

चिन्ता का ईलाज

— स्वेट मार्डन

स्पर्जन का कथन है कि अधीर लोग अपने संकटों के पौधों को स्वयं सींचा करते हैं और अपनी सुख–सुविधाओं को खुद–ब–खुद काटकर फेंका करते हैं।

एक किसान के एक पड़ोसी ने कहा – 'आओ देखें, यह किसकी गाडी आलुओं से भरी हुई है। तुम्हारी ही है न ? तुम तो कहते थे कि मक्की की खेती सारी सड़ गई और आलुओं की फसल आधी भी नहीं, परन्तु इस समय तो तुम्हारी आलुओं की फसल आधी भी नहीं परन्तु इस समय तो तुम्हारी आलुओं की गाड़ी भरकर जा रही है ?

इसके उत्तर में किसान ने कहा – हॉ, ठीक है कि आलुओं की फसल बहुत अच्छी हुई है, पर जानते हो, हमारी मुर्गियों को इस बार कितनी तकलीफ हुई ? उनका घर बनाने को भी ठीक–सी जगह नहीं रही। हर जगह खेती ही खेती ने स्थान घेर रखा था।

एक निराशावादी अच्छी से अच्छी बात में भी कोई न कोई पच्चर निकाल ही लेता है।

पेपिस की डायरी में हम पढ़ते हैं कि 'बन्द ऑखों तथा खुले कानों" तथा बन्द कानों और खुली ऑखों" में यह अन्तर है कि बन्द ऑखों वाला तीन घर दूर तक जाने पर ही यह सुन लेगा कि उस देश का नाश होने वाला है खुली ऑखों वाला देख लेगा कि उसका देश बड़ा सम्पन्न होने वाला है।

जान वेसले का कथन है कि "दूसरों को शाप देने और कसमें खाने से बढ़कर और कोई बुराई नहीं है। **असन्तोष से भरा मनुष्य, मनुष्य ही नहीं है, वह बेसुरे राग की तरह मधुरता और जीवन से रहित होता है।** वे लोग समाज को नींबू की तरह निचोड़कर निस्सार कर देने वाले होते हैं, जो बुरी घटनाओं की भविष्यवाणी किया करते हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति, वस्तु और घटना के बुरे पक्ष को महत्व देते हैं। ऐसे लोग अपनी एक ही दृष्टि से तूफान खड़ा कर देते हैं और आपके दांत खट्टे कर डालते हैं।

कुछ ऐसे महानुभाव भी होते हैं, जो आनन्द मनाने को बुरा समझते हैं। ऐसे लोग एक प्राचीन दिव्यात्मा की बात किया करते हैं जो मनुष्य को स्वंर्ग की ओरे ले चला था और जिसके रास्ते में पग–पग पर कांटें बिछा रखे थे। ऐसे दिव्य लोग निराशा की बातें किया करते हैं, वे हृदय को सदा निरूत्साहित किया करते हैं, वे प्रार्थना सभाओं को शीत से कम्पित किया करते हैं। वे दान देने वाली संस्थाओं का विरोध करते हैं, वे व्यापार को हासिया पंर पहुंचाते हैं, और जब प्रकाश करने का समय होता है तो बत्तियां बुझा देते हैं।

जिस मनुष्य में हास्य–विनोद की मात्रा नहीं, वह स्प्रिंग रहित वैगन या गाड़ी के डिब्बे के समान होता है, जिसमें जरा–सी ठीकरी भी आ जाय तो धक्का लगता है। हास्य विनोद से पूर्ण मनुष्य स्प्रिंगदार रथ के समान है। वह यदि खराब से खराब सड़क पर भी चले, तो भी सवारी को उसकी लचक से आनन्द ही आता है। जो मनुष्य आनन्द विनोद से भरा रहता है, उसकी कठिनाइयां उसके सामने पिघल जाया करती हैं। वह मनुष्य निरूत्साहित न होने की निरन्तर कोशिश करता रहता है। परन्तु जो मनुष्य सदा अपने दुर्भाग्य को कोसने में लगा रहता है, कठिनाईयां हमेशा उसके सामने जमा होती रहती है। उसके भाग्याकाश से बादल कभी हटते ही नहीं।

शोपनहार ने कहा है – "एक मनुष्य के लिए संसार बंजर है, नीरस है, व्यर्थ हैं, जबकि दूसरे मनुष्य के लिए संसार ऐश्वर्य, मनुष्य के लिए संसार ऐश्वर्य, मनोरंजन और अर्थ से भरपूर हैं।"

यदि कोई मनुष्य सुन्दरता से प्यार करता है और उसे ढूंढ़ने का प्रयत्न करता है, तो वह जहां जायेगा सुन्दरता ही देखेगा। यदि उसकी आत्मा में संगीत है, तो वह उसे प्रत्येक स्थान पर सुनेगा, उसके लिए प्रकृति का प्रत्येक पदार्थ संगीतमय प्रतीत होगा। दो मनुष्य एक ही घर में रहते हैं, एक ही काम करते हैं, परन्तु उनका संसार एक हर तरफ कुरूपता और गन्दगी दिखाई देती है, दूसरा अपने इर्द–गिर्द सुन्दरता ही देखता है। उसे हर तरफ सामंजस्य और सन्तुलन दिखाई देता है, उसके लिए प्रत्येक व्यक्ति दयालु है, कोई उसकी हानि नहीं चाहता। यदि ऊपर बताए दोनों मनुष्य समान वस्तुओं को देखते हैं परन्तु उनका दृष्टिकोण, उनके देखने का चश्मा एक–सा नहीं होता। एक धुंधले चश्में से देखता है, दूसरा साफ चश्मे से। जिसका चश्मा धुंधला है, उसके लिए संसार शोक और दुःख से भरा है। दूसरे व्यक्ति के लिए, जिसका चश्मा साफ है, चारों ओर गुलाब खिले हुए हैं। उसके सब ओर रमणीयता और सुन्दरता छाई हुई है।

दो आदमी एक ही पर्वत स्थान की यात्रा करके लौटते हैं। उनमें से एक आपको बताएगा – वहां कुछ भी नहीं देखा। हर एक आदमी वहां लूटता है। होटल का स्वामी चिड़चिड़ा था। कमरा गन्दा था। खाना रद्दी था। और दूसरा व्यक्ति आपको बतायेगा, वहां हर एक कोना सुन्दर था। होटल के मालिक हंसमुख और बड़े अच्छे स्वाभाव के थे। दृश्य सर्वोत्तम और खाने तो इतने बढ़िया थे कि कुछ न पूछो।

आशावादी किसे कहते हैं ?

– कमशः.............

पशु-पक्षियों की पुकार

पशु पक्षियों की एक महती सभा हो रही थी।
जनता मानवीय अत्याचारों पर रो रही थी।।

आदमी आज अतिक्रमण कर रहा है,
हर पशु पक्षी इससे डर रहा है।।

बड़ी गंभीरता से लोमड़ी ये बोली,
कुछ बातें बताने हेतु जबान खोली।
ये आदमी अपनी पहचान और कद हमसे ही बढ़ाता है,
तारीफ करने के लिए उदाहरण हमारा ही लाता है।।

अपनी वीरता की मिसाल शेर से,
ऑख की तुलना हिरण से करता है।
दगा देने में मेरा नाम लेता है,
रंग बदलने में गिरगिट का नाम होता है।

मीठी आवाज कोयल सी बताकर
शरीर बड़प्पन हाथी सा दिखाकर
अपनी तारीफों के कसीदे हमसे ही बताता है
हम पशु पक्षियों के गुण बड़ी खुशी से सुनाता है।

आदतों में भी ये परिवर्तन ला रहा
आदमी आज हमारी श्रेणी में आ रहा।

चापलूसी में भाई कुत्ते को पीछे छोड़ा है,
धोखा देने में मेरा रेकार्ड तोड़ा है।

स्वार्थ में ऑख मूंदकर चल रहा।
उल्लू जी की श्रेणी में ही पल रहा।।

गिद्ध सी लालची दृष्टि इसमें समायी है,
गन्दगी में भी कौवे सी वृत्ति पायी है।

जहर तो इसमें सांप से ज्यादा पाया जाता है,
आस्तिन का सांप ये कहलाता है।

हमारी समानता आज का आदमी अपने में ला रहा है
आदमियत छोड़ हमारी ओर आ रहा है।

पर ये गलत है कि फिर भी वही बड़ा कहलाता है,
हमारा नंबर दोयम दर्जे पर आता है।
ये तो सरासर ना इंसाफी और पक्षपात है,
पूछो भगवान से किस मायने में आदमी की हमसे बड़ी जात है।।

ये दूसरे प्राणियों के साथ अन्याय है,
सभी एक श्रेणी में हैं, हमारा यह सुझाव है।
वर्ना, जब गुण एक से, तो भेदभाव फिर ये कैसा,
या फिर अपने गुण अपनाकर रहे आदमी जैसा।।

इसलिए प्रस्ताव करते हैं – कि आदमी अपनी सीमा में रहे,
हमारी जाति को न अपनावें।
हम जो हैं वही ठीक है,
हमारे को अपने में न मिलावें।।

– *प्रकाश आर्य, महू*

महर्षि दयानन्द सरस्वती

दण्डी स्वामी को श्रेष्ट पात्र न पाया होता,
कलुषित साया न भारत से मिटाया होता।

ज्ञान पाकर के पाखण्ड सभी मिटा डाले,
राजा महाराजाओं को एक सूत्र कर डाले।
ज्ञान वेदों का, फिर से न बताया होता,
कलुषित साया न भारत से मिटाया होता।

मिटा अविद्या आर्ष ग्रंथों का गुणगान किया,
हक शिक्षा का दिया, नारी का सम्मान किया।
न होता वेदारम्भ, न वेद पढ़ाया होता,
कलुषित साया न भारत से मिटाया होता।

होके निर्भीक वो पाखण्ड खण्ड करते गय,
विरोधी स्वार्थी षड़यन्त्र उनसे करते गये।
पन्द्रह बार गरल गर न पचाया होता,
कलुषित साया न भारत से मिटाया होता।

विद्वज्जन, त्यागी और सतपुरूषों का सम्मान किया,
अहित चाहने वाले को अभय दान दिया।
दयालु ऐंसा न भरत में जो आया होता,
कलुषित साया न भारत से मिटाया होता।

अल्प अवधि में बहुत कार्य कर गये स्वामी,
सो गये सुख नींद मगर राष्ट्र जगा गये स्वामी।
सत्य प्रकाश जो घर–घर न पढ़ाया होता,
कलुषित साया न भारत से मिटाया होता।

– राधेश्याम गोयल "श्याम"
न्यू कॉलोनी, कोदरिया, महू

बाल सन्देश स्तंभ

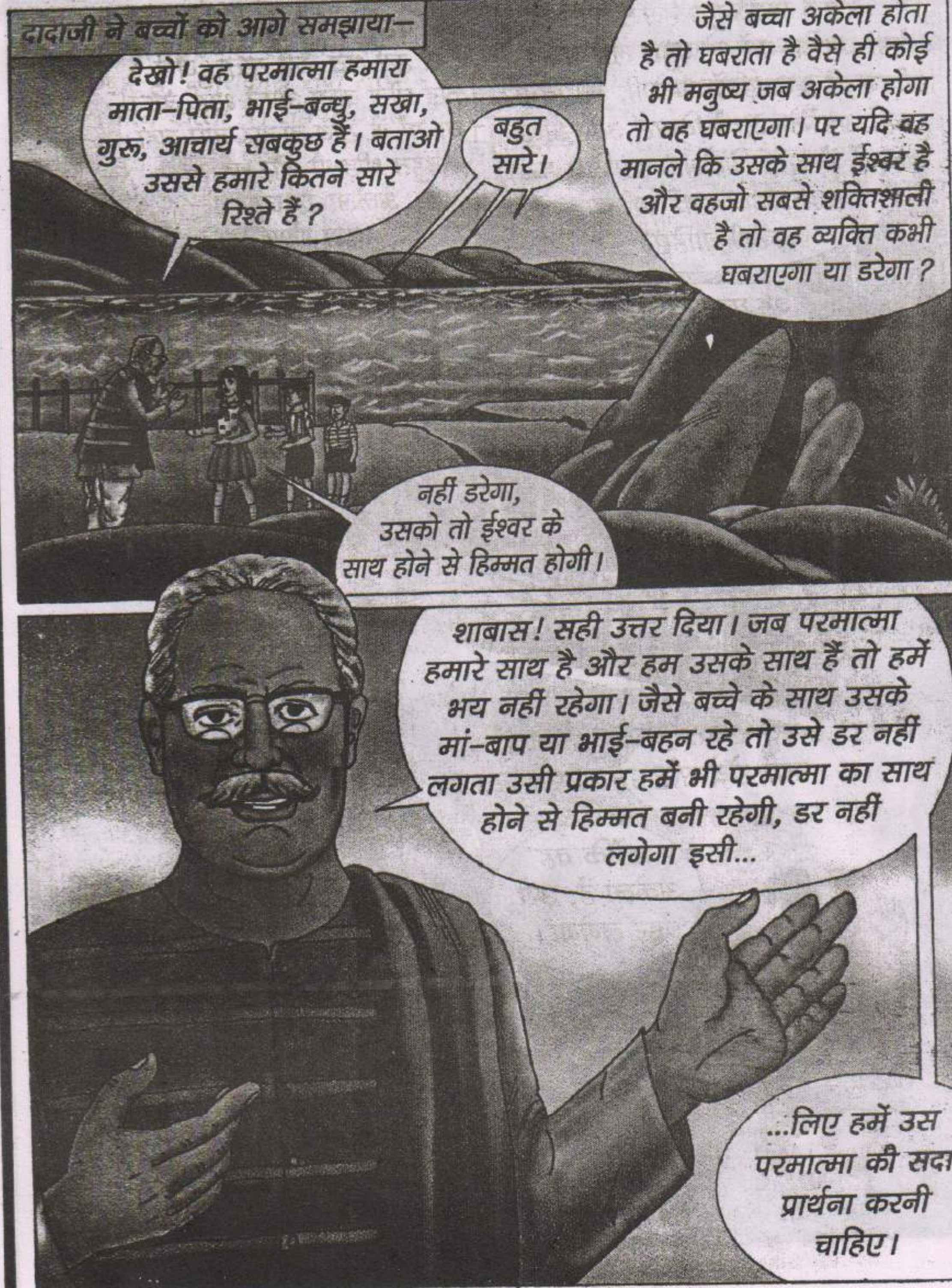
दादाजी ने बच्चों को आगे समझाया–
देखो! वह परमात्मा हमारा माता–पिता, भाई–बन्धु, सखा, गुरु, आचार्य सबकुछ हैं। बताओ उससे हमारे कितने सारे रिश्ते हैं ?
बहुत सारे।
जैसे बच्चा अकेला होता है तो घबराता है वैसे ही कोई भी मनुष्य जब अकेला होगा तो वह घबराएगा। पर यदि वह मानले कि उसके साथ ईश्वर है और वहजो सबसे शक्तिशाली है तो वह व्यक्ति कभी घबराएगा या डरेगा ?
नहीं डरेगा, उसको तो ईश्वर के साथ होने से हिम्मत होगी।
शाबास! सही उत्तर दिया। जब परमात्मा हमारे साथ है और हम उसके साथ हैं तो हमें भय नहीं रहेगा। जैसे बच्चे के साथ उसके मां–बाप या भाई–बहन रहे तो उसे डर नहीं लगता उसी प्रकार हमें भी परमात्मा का साथ होने से हिम्मत बनी रहेगी, डर नहीं लगेगा इसी...
...लिए हमें उस परमात्मा की सदा प्रार्थना करनी चाहिए।

दादाजी ने बच्चों को समझाने के लिए एक और प्रश्न पूछा–
अच्छा, तो बच्चों यह बताओ कि मनुष्य के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण वस्तु क्या है ?
दादाजी आप ही बताईये हमें नहीं मालूम।
देखो बच्चों! जीवन में सबसे महत्वपूर्ण है बुद्धि और ज्ञान। जिसके पास सत्य ज्ञान और अच्छी बुद्धि है उसके पास सब कुछ है...

कब जोश में आओगे

अब कौम के सरदारों कब होश में आओगे।
और होश में आये तो कब जोश में आओगे।।

अपनो को भी आप अब तक अपना सके तो फिर।
गैरों को तुम अपने में क्या खाक मिलाओगे।।

विधवाओं का मसला भी अब गौर के काबिल है।
हल इसका न सोचा तो नुकसान उठाओगे।।

घनश्याम के सुकुमारों, श्रीराम के शहजादों।
क्या शान बुजुर्गों की मिट्टी में मिलाओगे।।

मानी न अगर तुमने हक बात मुसाफिर की।
पछताओगे, रोओगे और अश्क बहाओगे।।

— कुंवर सुखलाल आर्य "मुसाफिर"

विदुर नीति

(महाभारत उद्योग पर्व से)

क्षिप्रं विजानाति चिरं श्रृणोति
विज्ञान चार्थ भजने न कामात्।
नासम्पृष्टो व्युपयुड्के परार्थे,
तत् प्रज्ञानं प्रथमं पण्डितस्य।।

विद्वान पुरूष किसी विषय को देर तक सुनता है, किन्तु शीघ्र ही समझ लेता है, समझकर कर्तव्य बुद्धि से पुरूषार्थ में प्रवृत्त होता है। कामना से नहीं, बिना पूछे दूसरे के विषय में व्यर्थ कोई बात नहीं कहता है, उसका यह स्वभाव पण्डित की मुख्य पहचान है।

— पहला अध्याय श्लोक 26

भ्रष्टाचार कारण व निवारण

– डॉ. त्रिलोकीनाथ क्षत्रिय

पचीस–पचहत्तर एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। यह सिद्धान्त औद्यागिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, व्यक्तिगत समस्याओं के निदान के लिए उपयोग में लाया जा सकता है। इस सिद्धान्त का सार यह है कि समस्त समस्याओं का यदि आंकलन किया जाए तो हम पाते हैं कि उसमें से पच्चीस प्रतिशत समस्याएं पचहत्तर प्रतिशत महत्वपूर्ण होती है। तथा पचहत्तर प्रतिशत समस्याओं का निराकरण कर लिया जाए तो पचहत्तर प्रतिशत समस्या क्षेत्र का निराकरण हो जाएगा।

भारतीय संस्कृति में यह सिद्धान्त सकारात्मक रूप में विद्यमान है। धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष के चार पुरूषार्थो में धर्म का पच्चीस प्रतिशत पचहत्तर प्रतिशत महत्वपूर्ण है। ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास आश्रमों में सोलह संस्कार, निर्धारित हैं उनमें से बारह ब्रह्मचर्यश्रम में ही निर्धारित हैं। उम्र के प्रथम पच्चीस वर्ष मानव जीवन के परिपेक्ष में पचहत्तर प्रतिशत महत्वपूर्ण है। पच्चीस, पचहत्तर एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त हैं तथा इस सिद्धान्त को अनेक जीवन क्षेत्रों में लागू किया जा सकता है। विद्यार्थी इसे परीक्षा पास करने के क्षेत्र में मैकेनिक तथा सुरक्षा अधिकारी इसे चेक लिस्ट के रूप में प्रायः प्रयोग मे लाते हैं।

इस सिद्धान्त का प्रयोग कर हम वर्तमान के नैतिक सामाजिक, राजनैतिक, प्रशासनिक, अवमूल्यन, भ्रष्टाचार तथा घटिया पन की तह तक भी पहुंच सकते हैं। व्यवस्था के चार भाग है। 1) विधायी व्यवस्था, 2) न्याय व्यवस्था, 3) कार्यकारी व्यवस्था, 4) सामान्य व्यवस्था। इनमें विधायी व्यवस्था पच्चीस प्रतिशत पचहत्तर प्रतिशत महत्वपूर्ण है। विधायी व्यवस्था (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में धर्म की तरह) बाकी व्यवस्थाओं में भी है। न्याय व्यवस्था, कार्यकारी (स्थाई) व्यवस्था तथा सामान्य व्यवस्था योग्यता अनुभव आधारित पद कम आधारित है। विधायी व्यवस्था तथा सामान्य व्यवस्था भी पद कम आधारित है। पर योग्यता अनुभव आधारित नहीं है।

व्यवहार जगत का हम एक उदाहरण लें, सर्वोच्च न्यायाधीश के पद दावेदार व्यक्ति पूरे भारत में करीब चार या पांच होगें। यह पद–योग्यता, अनुभव आधारित है। पद–योग्यता, अनुभव की कसौटी सामान्य जनोंको छांट देती है। इस पद के साथ उच्च अधिकार जुड़े हुए हैं। न्यायालय व्यवस्था में पद के योग्यता अनुभव आधारित कम है।

सबसे निम्न पद पर अर्दली है। अर्दली पद की योग्यता तथा अनुभव धारी व्यक्ति सारे भारत में करीब दो करोड़ होगें। अतः इस पद के अधिकार सबसे कम

हैं। अर्दली पद से भी घटिया पद योग्यता प्रधानमन्त्री, राष्ट्रपति आदि की है। तथा इस पद के दावेदार करीब बीस करोड़ हैं। पर इस पद के अधिकार सर्वाधिक हैं। पद अधिकार व पद योग्यता विधायी व्यवस्था में एक भयावह थोथापन है। यह असन्तुलन चिन्तनीय है। सारी विधायी व्यवस्था इसी असन्तुलन व्यवस्था में जी रही है।

प्रधानमन्त्री पद पर यदि संसार के सबसे बोदे पर सिद्धान्त हीन व्यक्ति को अगर प्रजातन्त्र व्यवस्था में बैठा दिया जाए तो अधिकारों के कारण, दबाव समूह (निहित घिनौने स्वार्थों के लिए एकजुट होना ही दबाव समूह या प्रजातन्त्री राजनैतिक दल हैं) के घटियापन के स्वीकार के कारण वह व्यक्ति भी इतिहास पुरूष हो जाएगा। यह पचहत्तर प्रतिशत महत्वपूर्ण विधायी व्यवस्था की विडम्बना है।

पैरटो के "अल्प ठोस" "बहुत विरल" सिद्धान्त के अनुसार उच्च संभ्रान्त वर्ग जीवन व्यवहार, रूढ़ियों, रस्मों की नियन्ता होता है। क्योंकि संभ्रान्त वर्ग के आचरण का सामान्य तथा निम्न वर्ग अनुपालन करता है। प्रजातन्त्र व्यवस्थाओं के क्रमशः ह्रसोन्मुख होने का महत्वपूर्ण कारण विधायी व्यवस्था का लचर होना है। "पदाधिकार योग्यता" अनुभव असन्तुलन के कारण विधायी व्यवस्था के पच्चीस प्रतिशत उच्चभाग (मन्त्री, उपमन्त्री, मण्डलादि) में अनिर्णयों, कुनिर्णयों, निहित स्वार्थ–निर्णयों का जन्म होता है। इनका फैलाव पूरी विधायी व्यवस्था में होता है। विधायी व्यवस्था राष्ट्र व्यवस्था का पच्चीस प्रतिशत है। अतः इस पचहत्तर प्रतिशत महत्वपूर्ण सर्वोच्चाधिकार प्राप्त संभ्रान्त के दुनिर्णय (भ्रष्ट निर्णय एवं व्यवहार) अन्य सुव्यवस्थित पर संविधानानुसार कम महत्वपूर्ण (मात्र पच्चीस प्रतिशत महत्वपूर्ण) व्यवस्थाओं में फैल जाते हैं। और पूरा प्रजातन्त्री राष्ट्र (यदि वह समूह नहीं है तो बहुत अधिक तेजी से) भ्रष्ट हो जाता है। विश्व प्रजातन्त्र इतिहास गवाह है। भ्रष्टाचार, नैतिक पतन, आर्थिक राजनैतिक तथा सामाजिक पतन की जड़े प्रजातन्त्र की विधायी व्यवस्था का (अ) सर्वोच्च अधिकार सम्पन्न होना, (ब) इसमें पद तथा योग्यता–अनुभव का औचित्य न होना, (स) इसके सदस्यों के क्रमशः अधिकार बढ़ते जाना, (द) अन्य तीन व्यवस्थाओं में विधायी व्यवस्था की घुसपैठ होना आदि में निहित है। इन जड़ों को यह विधायी व्यवस्था कभी नहीं काटेगी क्योंकि यह इससे श्रेष्ठ न तो हो सकती है न तो सोच सकती है। विधायी व्यवस्था में अयेग्यता घटियापन औसतनपन मताधिकार होना आदि संविधान में ही दिए गए हैं। अतः यहां आमूलचूल परिवर्तन द्वारा ही भ्रष्टाचार, कदाचार, पतन को समाप्त किया जा सकता है।

समाचार

आर्य समाज का पुरोहित और प्रचारक प्रशिक्षण केन्द्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना के अनुसार पूरे देश में पुरोहित प्रचारक व संगठक व्यक्तियों का प्रशिक्षण केन्द्र प्रारंभ करने की योजना बनी है। इसका प्रारंभ गुरुकुल होशंगाबाद में केन्द्र स्थापित होने जा रहा है, विगत दिनों गुरुकुल होशंगाबाद में स्वामी ऋतस्पति, आचार्य सत्यसन्धु के साथ विशेष चर्चा सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री आर्य सुरेशचन्द्र अग्रवाल, श्री प्रकाश आर्य महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री विनय आर्य उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा एवं श्री धर्मपाल आर्य उपप्रधान केन्द्रिय सभा दिल्ली तथा अन्तरंग सदस्य सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और साथ में मैं स्वयं (अतुल वर्मा) गुरुकुल पहुंचें।

गुरुकुल में प्रशिक्षार्थियों आचार्यों तथा उनके आवास के संबंध में एवं प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम पर चर्चा हुई। चर्चा के पश्चात प्रारंभ में 25 विद्यार्थियों प्रथम सत्र यथाशीध्र प्रारंभ किया जा रहा है। इस हेतु निम्नानुसार योग्यता वाले इच्छुक नवयुवक इसमें प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते है।

0 प्रशिक्षार्थी की आयु 22 से 35 वर्ष तक होना चाहिये।

0 प्रशिक्षणार्थी आध्यात्मिक वैदिक विचारधारा को जीवन में महत्व देने वाला तथा सौम्य सात्विक व आध्यात्मिक विचारधारा वाला होना चाहिये। स्वस्थ, शाकाहारी तथा किसी भी प्रकार के नशे या व्यसनों से दूर हो।

0 पुरोहित प्रशिक्षार्थी के लिये 6 से 8 माह की अवधि तथा प्रचारक व उपदेशक प्रशिक्षण की अवधि 12 से 15 माह निश्चित की है।

0 प्रशिक्षार्थी को प्रशिक्षण की समयावधि में निःशुल्क शिक्षण, आवास, भोजन और परिधान की व्यवस्था सभा की ओर से होगी, साथ ही प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को 1000 रू. अपने निजी व्यय के लिये भी प्रदान किया जाएगा।

प्रशिक्षणार्थी एक माह के पश्चात यदि अध्यापन नहीं करना चाहते हैं तो उन्हें 5000 रू. उन पर किये गये व्यय का सभा को देना होगा।

प्रशिक्षण प्राप्त कर लेने के पश्चात प्रत्येक प्रशिक्षार्थी 3 से 5 वर्ष तक सभा के अन्तर्गत और उसके निर्देशानुसार अपनी सेवाएं प्रदान करेगें। इस हेतु योग्यतानुसार उनका चयन कर उन्हें विभिन्न स्थानों पर वैदिक धर्म प्रचार प्रसार कार्य के लिये भेजा जाएगा।

प्रशिक्षण पूर्ण होने पर परिक्षार्थी की परीक्षा ली जावेगी, उत्तीर्ण होने पर एक माह में उनकी नियुक्ति की जाएगी। इस अवधि में योग्यता व स्थान के अनुसार

उनकी दक्षिणा सभा के द्वारा दी जाएगी जिसकी सीमा प्रारंभ के वर्ष में 6 से 20 हजार तक हो सकती है।

प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात 3 से 5 वर्ष तक सभा के निर्देशन में कार्य करना अनिवार्य शर्त होगी अन्यथा प्रशिक्षणार्थी विशेष स्थिति को छोड़कर 50000 रू. सभा को देने के लिये उत्तरदायी होगा। सभा के अन्तर्गत सेवा दे रहे विद्वानों के लिये समय–समय पर योग्यतानुसार उन्हें अन्य सुविधा और दक्षिणा वृद्धि की जावेगी।

0 पुरोहित प्रशिक्षण हेतु मैट्रिक अर्थात 10 वीं पास कम से कम शैक्षणिक योग्यता होना चाहिये तथा उपदेशक हेतु 12 वीं पास शास्त्री अथवा आचार्य की उपाधि होना आवश्यक है।

0 इच्छुक व्यक्ति अपना परिचय पत्र पूर्ण पारीवारिक विवरण, निवास और विद्यालय या गुरूकुल का प्रमाण पत्र तथा अन्य कोई विशेष योग्यता का उल्लेख करते हुए यथाशीघ्र भेजे।

यह आवेदन – **श्री प्रकाश आर्य**

महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

15, हनुमान रोड, दिल्ली – 1 अथवा

मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

आर्य समाज मन्दिर, महू जिला इन्दौर के पते पर प्रेषित करें।

जानकारी हेतु सम्पर्क – 09826655117, 07324–226566

विशेष – आवेदन आने पर प्रशिक्षण केन्द्र समिति द्वारा साक्षात्कार करने के पश्चात ही प्रशिक्षण हेतु विद्यार्थियों का चयन हो सकेगा। इस हेतु स्थान सीमित है और आवेदन आने प्रारंभ हो चुके है। अतः यथाशीघ्र अपनी जानकारी देवें अन्यथा स्थान पूर्ति होने पर इस बैच में सम्मिलित होना संभव नहीं होगा।

प्रिय पाठकवृन्द,

वैदिक रवि आपका अपना, अपनी सभा का पत्र है। प्रयास किया जा रहा है कि यह अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक पत्रिका बनें। हमारी अपनी बात उन लोगों तक भी पहुंचना चाहिए जो वैदिक विचारों से दूर हैं। इसी भावना से पत्रिका सम्पादन किया जा रहा है जिसे प्रत्येक व्यक्ति पढ़े और इसे पसन्द करे। इसके अधिक से अधिक पाठक हो सकें, इसलिए वैदिक रवि के ग्राहक संख्या बढ़ाने में सहयोगी बनें, अपने परिवार, मित्रों, सगे संबंधियों को इसके ग्राहक बनाइए।

विशेष–बार–बार निवेदन किया जा रहा है कि पत्रिका का और अच्छा स्तर बनें। इस हेतु अपने या स्थापित विद्वानों के लेख, विचार, कविता, समाचार महू के पते पर प्रेषित करें। कृपया इस ओर ध्यान देवें।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सिंगापुर–थाईलैन्ड 2014

सिंगापुर में 1 तथा 2 नवम्बर 2014 0 बैंकॉक में 8 तथा 9 नवम्बर 2014

सम्माननीय आर्यबन्धुओं !

सादर नमस्ते ! आपको यह सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के तत्वावधान में इस वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 1 तथा 2 नवम्बर 2014 को सिंगापुर में तथा 8 और 9 नवम्बर 2014 को थाईलैन्ड की राजधानी बैंकॉक में सम्पन्न होने जा रहा हे। इस सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये अनेक देशों के प्रतिनिधि सिंगापुर तथा बैंकॉक पहुंचेगें। भारतवर्ष से भी इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु बड़ी संख्या में आर्यजनों के पहुंचने की संभावना है।

सभी इच्छुक आर्यजन जो इस सम्मेलन में भाग लेने हेतु जाना चाहते हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के माध्यम से ही भाग ले सकेगें। सार्वदेशिक सभा के द्वारा स्वीकृत सदस्यों को ही सिंगापुर तथा थाईलैन्ड की प्रतिनिधि सभाएं अपने यहां प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार कर उनकी व्यवस्था करेगीं।

अनेकों आर्यजन इस अवसर पर दक्षिण पूर्व एशिया महाद्वीप का भ्रमण भी करना चाहते हैं, इसलिये उनकी भावनाओं को ध्यान में रखते हुए सिंगापुर तथा थाईलैन्ड के अत्यन्त रमणीय एवं महत्वपूर्ण स्थानों की यात्रा का भी रोचक कार्यक्रम बनाया गया है जिसकी जानकारी निम्न प्रकार है :–

भव्य सिंगापुर–थाईलैन्ड यात्रा (11 रात्रि 12 दिन)

30 अक्टूबर से 11 नवम्बर 2014 तक

प्रस्थान : दिनांक 30 अक्टूबर 2014 की रात्रि को दिल्ली से/मुम्बई से सिंगापुर के लिये प्रस्थान

वापिसी : दिनांक 11 अक्टूबर 2014 को बैंकाक से भारत के लिये वापिसी

कार्यक्रम :

31 अक्टूबर से 4 नवम्बर	सिंगापुर (5 रात्रि)
5 नवम्बर से 6 नवम्बर 2014	पटाया (2 रात्रि)
7 नवम्बर से 10 नवम्बर 2014	बैंकाक (4 रात्रि)
11 नवम्बर 2014	भारत वापिसी

सिंगापुर में आर्य महासम्मेलन 1 तथा 2 नवम्बर 2014 को है तथा बैंकाक में 8 तथा 9 नवम्बर 2014 को है। बाकी सभी दिनों में सिंगापुर, पटाया तथा बैंकाक के सभी विश्व प्रसिद्ध दर्शनीय स्थलों को दिखाया जायेगा। इस यात्रा की कुल व्यय राशि प्रति व्यक्ति रू. 98,500/– निश्चित की गई है जिसमें हवाई जहाज की अन्तर्राष्ट्रीय टिकटें, वीजा, इन्श्योरेन्स, सभी स्थानों पर आने–जाने की वाहन व्यवस्था, नास्ता, दोनों समय का भोजन, होटल व्यय, सभी स्थानों के प्रवेश टिकिट, मिनरल वाटर, टिप्स आदि के सभी शामिल है।

सिंगापुर यात्रा हेतु कुछ आवश्यक सूचनाएं

1. सभी यात्रियों को एडवांस राशि के साथ पासपोर्ट के प्रथम दो पृष्ठ तथा अन्तिम दो पृष्ठों की जेरोक्स कॉपी अवश्य भेजनी है। संलग्न आवेदन पत्र पर संबंधित आर्य समाज के पदाधिकारियों की अनुमति स्वीकृति आवश्यक है। एडवांस राशि प्राप्त होने के बाद COX & KINGS LTD. द्वारा आपको वीजा सबंधी तथा अन्य सभी सूचनाएं भेज दी जायेगी।

2. सार्वदेशिक सभा द्वारा इस यात्रा हेतु 5 सदस्यों की एक समिति गठित की गई है, जिसके संयोजक श्री अग्रवाल सुरेशचन्द्र आर्य, उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हैं। अन्य सदस्य श्री प्रकाशजी आर्य, महामन्त्री सार्वदेशिक सभा, श्री सजसिंह आर्य प्रधान – दिल्ली सभा, श्री धर्मपाल आर्य वरिष्ठ उपप्रधान, दिल्ली सभा तथा श्री विनय आर्य महामन्त्री दिल्ली सभा हैं।

3. यात्रा खर्च में 70 वर्ष तक के यात्रियों का बीमा खर्च शामिल है। 70 वर्ष से अधिक आयु वाले यात्री को अतिरिक्त बीमा खर्च ट्रेवल कं. को देना होगा अथवा उस यात्री को अपना बीमा स्वयं कराना होगा।

4. यह यात्रा विश्व विख्यात ट्रेवल ऐजेन्सी COX & KINGS LTD. द्वारा आयोजित की गई है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आपकी यह यात्रा अत्यन्त सुखद, आरामदायक एवं रोमांचक रहेगी।

विशेष (1) पृष्ठ 2 पर दर्शायी गई यात्रा व्यय राशि का भुगतान 31/08/2014 तक करना आवश्यक होगा।

(2) सिंगापुर तथा थाईलैन्ड के लिये प्रायः प्रत्येक यात्री को वीजा मिल जाता है लेकिन दुर्भाग्यवश किन्हीं विशेष कारणों से यदि किसी यात्री को वीजा नहीं मिलता है तो वीजा चार्जेज तथा एअर टिकिट के केन्सीलेशन चार्जेस (नियमानुसार) को कम करके ही शेष राशि यात्री को लौटाई जायेगी।

(3) ध्यान रहे कि इस यात्रा के लिये आपके पासपोर्ट की वैधता (Validity) 15/05/2015 तक होनी आवश्यक है।

(4) यात्रा की बुकिंग होने के पश्चात यदि किसी यात्री का कार्यकम साधारण परिस्थिति में स्थगित होता है तो उसे उसका पैसा जिन नियमों के अन्तर्गत वापस किया जायेगा, वे सभी नियम शीघ्र ही अलग से E mail द्वारा अथवा SMS द्वारा सभी यात्रियों को भेज दिये जायेगें।

कृपया उपरोक्त बातों को ध्यान में रखकर ही आवेदन पत्र व राशि भेजें ताकि बाद में अकारण कोई विवाद न हो। यात्रा संबंधी अन्य जानकारी हेतु निम्न लिखित महानुभावों से सम्पर्क कर सकते हैं –

1. श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल मो. 098240 72509
2. श्री विनय आर्य मो. 09958174441

पवित्र वैदिक धर्म की पताका का केन्द्र – केरल

ईश्वरीय ज्ञान जन–जन तक जब तक नहीं फैलेगा, तब तक यह संसार सुख शान्ति से दूर रहेगा। महर्षि दयानन्द ने इसी पवित्र उद्देश्य को लेकर आर्य समाज के माध्यम से हमें यह सन्देश दिया कि आर्य समाज का उद्देश्य संसार का उपकार करना है। उसी भावना से विपरीत परिस्थितियों में भी इस ओउम् पताका को फहराने में कुछ महामना पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहे है। वास्तव में ऐसे महामना स्तुत्य और प्रशंसा के पात्र हैं। जिन स्थानों पर आर्य समाज और वेद की ऋचाएं नहीं गूंज रही हैं वहां पर भी उसे पहुंचाना **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** का एक भूमिका है। महाशय धर्मपाल जी, महर्षि के उस सपने को पूरा करने में जो सहयोग कर रूचि ले रहे हैं वह इतिहास के स्वर्णाक्षरों में अंकित होगी।

कुछ दिन पूर्व ही केरल कोटीकट में **एक कार्यक्रम** के माध्यम से उपस्थित होने का उन्हें अवसर मिला आचार्य एम आर राजेश ने वहां पर एक अद्‌भुत दृश्य जन सैलाब के रूप में उपस्थित किया। जिसे देखकर किसी भी आर्य का अभिभूत होना सामान्य बात थी। भाई विनय आर्य, श्री सुरेशजी आर्य तथा महाशय धर्मपाल जी व अन्य सहयोगियों ने वहां की श्रद्धालु जनता की भावना को समझा और विचार किया कि इस स्थान पर परमात्मा की उस पवित्र वाणी वेद का प्रचार प्रसार करने के लिये अनुकूल मानसिकता है। आचार्य एम आर राजेश एक कर्मठ, व्यवहारिक और समर्पित व्यक्तित्व के धनी हैं, जिनके पास योजना है, साहस है, समर्पण भाव है, किन्तु अभाव साधनों का है। यदि साधन जुटा दिये जाये तो यहां आर्य समाज के लिये एक बड़ा क्षेत्र तैयार हो सकता हैं।

इन विचारों से महाशय धर्मपाल जी ने आपस में विचार विमर्श कर भूमि खरीदने का निर्णय लिया और अभी एक सप्ताह पूर्व वहीं पर दो करोड़ रूपए की लागत से केरला के कालीकट में भूमि खरीदी। दिनांक 15/8/2014 को इसका शुभारंभ हो रहा है। इस भूमि में वैदिक सिद्धांतों के अतिरिक्त मानव और सुसंस्कृत समाज के हेतु गतिविधियां प्रारंभ की जाएंगी। इस प्रकार यह कार्य आर्य जनों को उत्साहित और नव चेतना देने वाला है। निश्चित ही जहां आर्य समाज के प्रति कुछ लोग निराशा भाव रखते हैं, उनके लिए यह कार्य एक नव चेतना देने वाला होगा। इस हेतु महाशय धर्मपालजी को समस्त आर्यजन की ओर से अनेकानेक साधुवाद। जो भामाशाह बनकर महर्षि के सपनों को पूर्ण करने और ओउम् पताका फहराने में अपना वरद हस्त हमेशा हम पर रख रहे है। ऐसे महामना के प्रति उनके दीर्घायु और उनके स्वस्थ जीवन की सभी आर्यजन परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

आस्था चैनल पर वैदिक प्रवचन

आस्था चैनल पर प्रतिदिन रात्रि 9.30 पर विचार टी. वी. के माध्यम से वैदिक विद्वानों के प्रवचनों का प्रसारण प्रारंभ हो गया है। आप स्वयं देखें व दूसरों को जानकारी देवें।

॥ ओ३म् ॥
ISO 9001 Company with Export Excellence Award
sabar
साबर पम्पस्
एक नाम भरोसेमंद व लम्बी सेवा के लिये मशहूर
मोटर में EC ग्रेड शुद्ध कापर रोटर का कमाल
POWER SAVINGS GUIDE
SSR 503
(0.5 HP Die Cast Body 1440 RPM)
SLM 50
(0.5 HP)
विनसब
ओपनवेल
SSM 50
(0.5 HP Speed Master)
50 Feet Pumps
V4 V5 V6
कम वोल्टेज में भी बढ़िया काम देता है।
3 Phase Horizontal Open Well Set
(3 HP to 17.5 HP)
साफ पानी पिये और स्वस्थ रहें....
आपकी सेहत का रखे पूरा ध्यान
ULTRA
RO Water Purifying Systems
RO SYSTEM
40 वर्षों से आपकी सेवा में
जागृति
(राऊ वाले)
कम्पनी द्वारा अधिकृत विक्रेता:
सत्य इण्टरप्राईजेस
हेड ऑफिस : 17, क्षीर सागर, शॉपिंग काम्पलेक्स, उज्जैन फोनः 0734-2556173
ब्रांच ऑफिस : 144, चिमनगंज मण्डी, उज्जैन मोबाईल : 9425930484, 94259-15751

एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2012-14

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा

तात्या टोपे नगर, भोपाल-462003(म.प्र.)

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा चतुर्वेदी प्रिन्टर्स, इन्दौर से मुद्रित कराकर
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक – **प्रकाश आर्य, महू**

AMIT # 98262-710